एन्टीबायोटिक, दस्तरोधी व बुखार कम करने की दवा लगवाकर उपचार करें।

पी. पी. आर के लक्षण

इस बीमारी के लक्षण प्रकट होने पर तुरंत नजदीक के पशु चिकित्सालय / पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

प्रकाशकः–
डॉ. ए. के. ठाकुर
निदेशक प्रसार शिक्षा
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना–14

डॉ0 पंकज कुमार
डॉ सरोज कुमार रजक
डॉ पुष्पेन्द्र कु0 सिंह
सहायक प्राध्यापक, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

पी.पी. आर (बकरी प्लेग)

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना–14

पी.पी.आर (बकरी प्लेग)

यह विषाणुजनित रोग भेड़ एवं बकरियों में पाया जाता है। भेड़ों की अपेक्षा बकरियॉ इस रोग से अधिक प्रभावित होती है। छुआछुत से फेलनेवाले रोग के विषाणु स्वस्थ पशु के रोगी पशु के सम्पर्क में आने से तथा रोगी पशु द्वारा उत्सर्जित मल-मुत्र तथा संदूषित चारे-पानी से फेलते हैं। रोग का प्रकोप बहुधा वर्षा ऋतु में होने की संभावना अधिक रहती है।

लक्षण

- तीव्र बुखार।
- मुंह मसूडे एवं जीभ पर घाव (छाले या अलसर)।
- नाक से स्त्राव बहना जो बाद की अवस्था में मवादयुक्त होकर नासिका को अवरूद्धकर देता है जिससे पशु मुंह से सांस लेने लगता है।
- ऑखों से पानी बहना, उनमें सूजन आ जाना व झिल्ली का रंग गहरा लाल हो जाना।
- खांसी व निमोनिया होना।
- पशु को तीव्र बदबूदार दस्त होने से शरीर में पानी का कम होना शामिल है।
- इस रोग मे मृत्युदर लगभग 55-84 प्रतिशत तक पाई जाती है।

संचरण और फेलाव

- भेड़ों की अपेक्षा बकरियॉ इस रोग से अधिक प्रभावित होती हैं।
- संक्रमित पशुओं के साथ सम्पर्क में आना।
- दूषित जल और चारा खाने से।
- दूषित हवा में सॉस लेने से।
- पशु हाट।

रोकथाम

- रोगी पशु को स्वस्थ्य पशु से अलग कर देना चाहिए।
- नियमित रूप से साफ- सफाई करना जरूरी है।
- चार माह से अधिक आयु वाले पशुओं का पी.पी. आर का टीकाकरण आवश्यक रूप से नवम्बर से फरवरी माह के बीच करवाएं। प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार टीकाकरण से रेवड़ में रोग के विरूद्ध प्रतिरोधकता बनी रहती है।
- बीमार पशु को पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार

संरक्षण हेतु ने किसानों को कई रियासतों की पेशकश भी की है। जरूरत है कि हम अच्छी योजना, जानकारी एवं विश्वास के साथ इस मुर्गी पालन को अपनाये एवं आधुनिक तकनीकों की मदद से इनमें अपने लाभ का दिन प्रतिदिन बढ़ाते जाएँ।

कैसे शुरू करें:-

सही कड़कनाथ नस्ल की मुर्गे- मुर्गियों का चुनाव।
समान्यतया 30-50 की संख्या से शुरूआत करना लाभप्रद है।
लाये गए चूजों का टीकाकरण होना सुनिश्चित करें।
दो हफ्तों की उम्र तक इन चूजों के प्रकाश, पानी दाना एवं रहन सहन की विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

प्रकाशकः-
डॉ. ए. के. ठाकुर
निदेशक प्रसार शिक्षा
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

डॉ0 पंकज कुमार
डॉ सरोज कुमार रजक
डॉ पुष्पेन्द्र कु0 सिंह
सहायक प्राध्यापक, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

कड़कनाथ पालन किसानों के लिए श्रेयस्कर

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

कड़कनाथ

परिचय

कड़कनाथ विश्व के मुख्यतया 3 काले मांस वाले मुर्गे में से एक प्रजाति है। इसके अलावा अन्य प्रजाति सिल्की जो की चीन में पाई जाती है, और इंडोनेसिया में पाई जाने वाली अयाम सेमानी है। कड़कनाथ के मुख्यतया 3 प्रजातियॉ होती हैः-एक जेट ब्लेक प्रजाति जो पूर्णतया काले रंग की होती है। पेनसिल्ड कड़कनाथ जिसके पंख मुख्यतया ग्रे रंग क होते हैं।

गोल्डन कड़कनाथ जिनके पंखों पर गोल्उन रंग क छींटे पाए जाते है। यह प्रजाति मध्यप्रदेश के झबुआ, धार जिले एवं छतीसगढ़ के आदिवासी जिलों मे पाई जाती है। एक दिन के चूजों के पीट पर अनियमित नीले तथा काले धारियों के साथ मुख्यतया नीले तथा काले रंग के होते हैं। कड़कनाथ मुर्गी की त्वचा, चोंच, पैर की उंगलियों और पैरों के तलवों का रंग हलके काल रंग के होते हैं। कलगी और जीभ बैंगनी रंग के होते हैं। आंतरिक अंगों के अधिकांश भाग तीव्र काले रंग के होते हैं।

कड़कनाथ का रक्त सामान्य मुर्गों से गहरा काले रंग का होता है। जिसकी वजह शरीर में पाए जाने वाले वर्णक मेलेनिन के जमाव का परिणाम है।

यह प्रजाति मुख्यतया अपनी पर्यावरण के अनुसार अनुकूलन क्षमता, रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उच्च गुणवत्ता वाले मांस एवं अण्डों के लिए जानी जाती है। इस नस्ल का मांस काला होता है और यह अपने उत्तम स्वाद के साथ अपने औषधीय गुणों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

पोषण एवं गुणवत्ता

पोषन गुणवत्ता सभी कुक्कुट नस्लो मे सर्वाधिक प्रोटीन की उपस्थिति । विटामिन ठ1ए ठ6ए ठ12ए नियासिन, विटामिन ब एवं विटामिन म की प्रचुर उपलब्धता वर्तमान में इसकी बढ़ती हुई मांग की खास वजह मानी जाती है। इसके अलावे खनिजों में लौह तत्व, कैल्शियम एवं फास्फोरस की समुचित मात्रा इसे अन्य मांस प्रकारों से भिन्नता प्रदान करती है। कड़कनाथ का अंडा भी अच्छी पोषण गुणवत्ता वाला एवं वृद्ध जनों हेतु सुपाच्य माना गया है।

गुण(पोषण)	कड़कनाथ नस्ल	अन्य नस्लें
प्रोटीन	25%	18-20%
वसा	0.73-1.03%	13-25%
लिनोलेनिक अम्ल	24%	21%
कोलेस्ट्रोल	184 मिलीग्राम/100 ग्राम मांस	218 मिलीग्राम/100 ग्राम मांस

औषधीय गुण

कड़कनाथ के मांस का होम्योपैथी चिकित्सा में विशेष औषधीय मूल्य और कुछ विशेष तंत्रिका विकार के निदान में महत्वपूर्ण स्थान है। कई जीर्ण रोगों के उपचार मे आदिवासी लोग कड़कनाथ के रक्त का भी उपयोग करते हैं। इसके अलावा कड़कनाथ के मांस मे प्रजनन से सम्बंधिम समस्याओं के निदान में भी उपयोगी पाया गया है।

इसके मांस से लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या एवं हीमोग्लोबीन की मात्रा में वृद्धि के भी संकेत मिले हैं। इसके मांस के सेवन से श्वसन सम्बन्धी समस्याओं में भी अपेक्षित लाभ मिलता है। कई अनुसंधान में इसे रक्तचाप के उपचार में भी इसका महत्व दर्शाया गया है।

विवरण	कड़कनाथ नस्ल
चूजे का वजन	28- 30 ग्राम
शरीर का रंग	काला
8 सप्ताह के बाद शारीरिक भार	0.8 कि.ग्राम
व्यस्क नर का शारीरिक भार	2.2-2.5 कि.ग्राम
व्यस्क मादा का शारीरिक भार	1.5-1.8 कि.ग्राम
ड्रेसिंग प्रतिशत	65 %
पहला अंडा मिलने की उम्र	24 सप्ताह
अंडे सेने की क्षमता	कम
प्रति माह अंडा उत्पादन	11-13
प्रति वर्ष अंडा उत्पादन	120
औसत अंडे का भार	45 ग्राम
अंडे का रंग	भूरा

कड़कनाथ पालन

यह किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने का एक अहम तरीका हो सकता है। बाजार की अच्छी व्यवस्था हो जाने पर इसके उत्पाद की खपत मे आसानी होती है। कई राज्य सरकारों ने जैसे मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि ने इसके